बी. ए. अन्तिम वर्ष
विपणन प्रबंधन

(प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय - 1 विपणन : प्रकृति, क्षेत्र, महत्व तथा विचारधाराएँ

बाजार क्या है?, विपणनकर्त्ता कौन होता है?, विपणन का आशय एवं परिभाषाएँ, लक्षण/प्रकृति, किसका विपणन किया जा सकता है?, विपणन का महत्व, विपणन का कार्यक्षेत्र, विपणन तथा जीवन-स्तर, सामाजिक विपणन, विपणन एवं विक्रय में अन्तर, विपणन प्रबन्ध : आशय एवं परिभाषाएँ, विपणन प्रबन्ध का क्षेत्र, विपणन प्रबन्ध एवं विक्रय प्रबन्ध में अन्तर, विपणन अवधारणा, विपणन अवधारणा का विकास, विपणन की आधुनिक अवधारणा, मान्यताएँ, विपणन की आधुनिक एवं प्राचीन अवधानणा में अन्तर, सामाजिक विपणन अवधारणा तथा विपणन अवधारणा में अन्तर।

अध्याय - 2 विपणन मिश्र एवं विपणन वातावरण

विपणन मिश्रण के तत्व, विपणन वातावरण, आन्तरिक वातावरण, बाह्य वातारवण, विपणन वातावरण के अध्ययन का महत्व, विपणन वातावरण की प्रकृति।

अध्याय - 3 उपभोक्ता व्यवहार : प्रकृति, क्षेत्र व महत्व

उपभोक्ता व्यवहार : आशय एवं परिभाषाएँ, क्रेता-व्यवहार का महत्व, उपभोक्ता व्यवहार का स्वभाव, प्रभावित करने वाले कारक, उपभोक्ता व्यवहार के अध्ययन की रीतियाँ, क्रय-निर्णय प्रक्रिया, उपभोक्ता व्यवहार के प्रतिरूप, संगठनात्मक क्रय व्यवहार, संगठनात्मक क्रय निर्णय प्रक्रिया, क्रय प्रेरणाएँ, क्रय प्रेरणाओं के प्रकार, क्रय प्रेरणाओं को तय करने में बाधाएँ, क्रय प्रेरणाओं की जानकारी का महत्व, संगठनात्मक क्रय व्यवहार तथा व्यक्तिगत क्रय व्यवहार में अन्तर।

अध्याय - 4 बाजार विभक्तिकरण: अवधारणा, महत्व एवं आधार

बाजार विभक्तिकरण: आशय एवं परिभाषाएँ, बाजार विभक्तिकरण के उद्देश्य, बाजार विभक्तिकरण के विकास के कारण, बाजार विभक्तिकरण के आधार, बाजार विभक्तिकरण के लाभ, बाजार विभक्तिकरण सम्बन्धी रणनीतियाँ, बाजार विभक्तिकरण के आवश्यक तत्व, लक्ष्य बाजार रणनीति पर प्रभाव डालने वाले कारक, बाजार विभक्तिकरण की विधियाँ, वस्तु भिन्नता तथा बाजार विभक्तिकरण के अन्तर।

खण्ड - II

अध्याय - 5 उत्पाद : अवधारणा, उपभोक्ता एवं औद्योगिक माल तथा उत्पाद जीवन चक्र

उत्पाद: आशय एवं परिभाषाएँ, उत्पादक वर्गीकरण, उत्पाद जीवन–चक्र, उत्पाद जीवन–चक्र पर प्रभाव डालने वाले कारक, उत्पाद में सुधार तथा उत्पाद जीवन–चक्र, उत्पाद जीवन–चक्र पर प्रभाव डालने वाले कारक, गुण/ महत्व, औद्योगिक उत्पाद तथा उपभोक्ता उत्पाद में भिन्नता, उत्पाद रणनीतियाँ, उत्पाद के गुण, उत्पाद निर्णय, उत्पाद मिश्रण पर प्रभाव डालने वाले कारक, नये उत्पादों का वर्गीकरण।

अध्याय - 6 उत्पाद नियोजन एवं विकास

उत्पाद नियोजन क्या है?, वस्तु नियोजन की उपयोगिता, उत्पाद अप्रचलन, उत्पाद विकास: आशय एवं परिभाषाएं, उत्पाद विकास का महत्व, उत्पाद विकास के सिद्धान्त, उत्पाद विकास की प्रक्रिया, उत्पाद परित्याग, उत्पाद संशोधन, उत्पाद नवकरण, उत्पाद नवकरण के लिए उत्तरदायी कारण, सफल उत्पाद नवकरण हेतु आवश्यक दशाएँ, वस्तु नियोजन हेतु संगठन, उत्पाद विकास के स्त्रोत, उत्पाद अनुकूलन, उपभोक्ता वर्ग का वर्गीकरण, उपभोक्ता अनुकूलन: प्रक्रिया।

अध्याय - 7 पैकेजिंग, ब्राण्ड नाम व व्यापार चिन्ह तथा विक्रयोपरान्त सेवा

पैकेजिंग के उद्देश्य, पैकेजिंग के उद्देश्य, पैकेजिंग के कार्य, पैकेजिंग की उपयोगिता, पैकेजिंग के विभिन्न स्तर, पैकेजिंग निर्णय, पैकेजिंग में परिवर्तन करना, अच्छे पैकेज की मुख्य बातें, पैकेजिंग के प्रकार, ब्राण्ड एवं व्यापार चिन्ह, अच्छे ब्राण्ड नाम की विशेषता एँ, ब्राण्ड के गुण, ब्राण्ड तथा ट्रेडमार्क, ब्राण्ड तय करना, ब्राण्ड परीक्षण, लेबल लगाना, विक्रयोपरान्त सेवा, विक्रय अवरोध।

अध्याय - 8 मूल्य : विपणन मिश्रण में मूल्य का महत्व, प्रभावित करने वाले कारक बट्टा व छूट

मूल्य क्या होता है?, मूल्य निर्धारण का महत्व, प्रभावित करने वाले कारक, मूल्य व्यूह रचना/नीतियाँ, मूल्यन प्रक्रिया, मूल्यन के ढंग, मूल्यन हेतु वांछित सूचनाएँ, पुन: विक्रय मूल्यन, बट्टा व छूट।

खण्ड - III

अध्याय - 9 वितरण माध्यम : अवधारणा, भूमिका, प्रकार एवं प्रभावित करने वाले कारक

आशय एवं परिभाषाएँ, वितरण वाहिका के गुण, वितरण वाहिकाओं की भूमिका का कार्य, फर्म द्वारा मध्यस्थों को काम में लाने के कारण, वितरण वाहिकाएं : प्रकार, वितरण वाहिका का चयन, वाहिका निर्णयन व अभिकल्पन, विपणि विस्तार, विपणन मध्यस्थ, वितरण नीतियाँ, एकमात्र एजेन्सी या डीलरशिप।

अध्याय - 10 थोक तथा फुटकर विक्रेता

थोक व्यापारी, कार्य, वर्गीकरण, क्या थोक व्यापारियों को हटा देना चाहिए?, फुटकर विक्रेता, फुटकर विक्रेता के कार्य, उत्पादकों द्वारा फुटकर बिक्री, भविष्य, फुटकर

विक्रेताओं के प्रकार, फुटकर व्यापार की सफलता हेतु आवश्यक बातें, बहुविकल्प शाला, विभागीय भण्डार।

अध्याय - 11 भौतिक वितरण, परिवहन, भण्डारण, स्कन्ध नियन्त्रण एवं आदेश प्रसंस्करण

भौतिक वितरण: आशय एवं परिभाषाएँ, भौतिक वितरण के महत्व में वृद्धि के कारण, भौतिक वितरण के संघटक।

अध्याय - 12 संवर्द्धन : विधियाँ एवं अनुकूलतम उत्पाद मिश्रण

संवर्द्धन अथवा प्रवर्तन का आशय एवं परिभाषाएँ, संप्रेषण निर्णय, सम्प्रेषण र्द्धन के उद्देश्य, संवर्द्धन निर्णय, संवर्द्धन मिश्रण निर्णय लेना, संवर्द्धन की भूमिका, प्रभाव डालने की भूमिका, अनुकूलतम संवर्द्धन मिश्रण, संवर्द्धन के उपकरणों में अन्तर।

खण्ड - IV

अध्याय - 13 विज्ञापन माध्यम : गुण एवं सीमाएँ एवं प्रभावी विज्ञापन की विशेषताएँ

विज्ञापन का आशय एवं परिभाषाएँ, विशेषताएँ, विज्ञापन के लाभ, विज्ञापन के प्रति आरोप, विज्ञापन के उद्देश्य, विज्ञापन माध्यम, मीडिया माध्यम एवं व्यय, विज्ञापन माध्यम के चुनाव को प्रभावित करने वाले तत्व, विज्ञापन प्रभावोत्पादकता मापन के ढंग।

अध्याय - 14 वैयक्तिक विक्रय

वैयक्तिक विक्रय: आशय एवं परिभाषाएँ, वैयक्तिक विक्रय की विशेषताएँ, उद्देश्य, वैयक्तिक विक्रय के विभिन्न लाभ, वैयक्तिक विक्रयकर्ताओं के प्रकार, वैयक्तिक विक्र य के कार्य, वैयक्तिक विक्रय के दोष, बाजार में वैयक्तिक विक्रय की प्रक्रिया, वैयक्ति क विक्रय के ढंग, वैयक्तिक विक्रेता के गुण, सफल विक्रयकर्ता पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते, प्रचार, विज्ञापन तथा वैयक्तिक विक्रय में अन्तर, विज्ञापन विक्रय संवर्द्धन वैयक्ति क विक्रय में अन्तर।

अध्याय - 15 विक्रयण : एक पेशा, विक्रयकर्ताओं का वर्गीकरण एवं कार्य

विक्रय से पूर्व विषय या प्रक्रिया, विक्रय रुकावटों को दूर करना अथवा विक्रय कठिनाइयों को दूर करने के उपाय, ग्राहक द्वारा जाँच या परीक्षा, विक्रय समाप्ति, विक्रय कर्ता का अर्थ एवं परिभाषा, विक्रयकर्ता का महत्व, एक विक्रयकर्ता के कार्य या कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व, विक्रयकर्ताओं के प्रकार, यात्री विक्रेता एवं काउण्टर विक्रयकर्ताओं में अन्तर, विक्रय: एक पेशा।

वित्तीय प्रबन्ध

(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय 1 : वित्तीय प्रबंध : एक परिचय

इतिहास एवं विकास, अर्थ एवं परिभाषा, महत्व, प्रकृति, सीमाएँ, अवधारणाएँ, वित्तीय प्रबन्ध के कार्य

अध्याय 2 : पूँजी बजटन – I

पूँजी बजटन का अर्थ एवं परिभाषायें, पूँजी बजटन के उद्देश्य, पूँजी बजटन की मुख्य विशेषतायें, पूँजी व्यय या पूँजी परियोजनाओं के प्रकार, पूँजी बजटन की प्रक्रिया, पूँजी बजटन के महत्त्वपूर्ण घटक, पूँजी बजटन का महत्व, पूँजी बजटन की सीमाएँ

अध्याय 3 : पूँजी बजटन – II

पूँजी बजटन प्रविधियाँ, परम्परागत विधियाँ, अपरिहार्यत विधि, अदायगी अवधि विधि, औसत प्रत्याय दर विधि, अपहरित रोकड़ प्रवाह विधियाँ, शुद्ध वर्तमान मूल्य विधि, वर्तमान मूल्य सूचकांक या लाभदायकता सूचकांक विधि, आंतरिक प्रत्याय दर विधि, अन्य विधियाँ

खण्ड - II

अध्याय 4 : पूँजी की लागत

पूँजी की लागत का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पूँजी की लागत की विशेषताएँ, पूँजी की लागत की अवधारणा का महत्व, पूँजी की लागत का वर्गीकरण, पूँजी की लागत की गणना

अध्याय 5 : परिचालन एवं वित्तीय उत्तोलक

अर्थ, परिभाषा, उत्तोलक के प्रकार, परिचालन उत्तोलक, वित्तीय उत्तोलक, संयुक्त उत्तोलक, उदाहरण

खण्ड - III

अध्याय 6 : पूँजी संरचना: सिद्धान्त एवं निर्धारण करने वाले तत्व

शुद्ध आय सिद्धान्त, शुद्ध परिचालन आय सिद्धान्त, परम्परागत सिद्धान्त, मोदीग्लियानी-मिलर सिद्धान्त, पूँजी संरचना का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पूँजी संरचना, वित्तीय संरचना तथा सम्पत्ति संरचना , पूँजी संरचना को प्रभावित करने वाले तत्व, संतुलित या अनुकूलतम पूँजी संरचना, क्या अनुकूलतम पूँजी संरचना एक मिथक/कल्पना है?, पूँजी संरचना का नियोजन या निर्णयन, समता पर व्यापार, पूँजी दन्तिकरण, पूँजी की लागत

अध्याय 7 : लाभांश नीतियाँ

लाभांश का अर्थ एवं परिभाषाएं, लाभांश घोषणा एवं वितरण के सम्बन्ध में भारतीय कम्पनी अधिनियम के प्रावधान, प्रावधान, लाभांश के प्रकार, बोनस अंश या स्कन्ध लाभांश, लाभांश नीति का अर्थ, एक सुदृढ़ लाभांश नीति के आवश्यक तत्व, लाभांश नीति का निर्धारण एवं प्रकार, सुस्थिर लाभांश नीति के लाभ, सुस्थिर लाभांश-नीति का निर्माण, लाभांश नीति को प्रभावित करने वाले तत्व, लाभांश की प्रासंगिकता एवं लाभांश प्रमेय, समीक्षा, गॉर्डन फार्मूला अथवा प्रमेय

खण्ड - IV

अध्याय 8 : कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध

कार्यशील पूँजी के प्रकार, कार्यशील पूँजी का महत्व, आवश्यकता से अधिक कार्यशील पूँजी के दोष, कार्यशील पूँजी के स्त्रोत, कार्यशील पूँजी के मात्रा के निर्धारक घटक, कार्यशील पूँजी का अनुमान लगाने की विधियाँ, बैंकों द्वारा कार्यशील पूँजी के निर्धारण में शिथिलता

अध्याय 9 : रोकड़ का प्रबन्ध

नकद/रोकड़ कोषों की आवश्यकता, रोकड़ स्तर को निर्धारित करने वाले तत्व, रोकड़ प्रबन्ध के उद्देश्य, रोकड़ प्रबन्ध के लाभ, रोकड़ प्रबन्ध के दोष, रोकड़ प्रबन्ध के कार्य

अध्याय 10 : प्राप्यों का प्रबन्ध

अर्थ एवं परिभाषा, आवश्यकता, क्षेत्र, उदाहरण

अध्याय 11 : स्कन्ध प्रबन्ध

स्कन्ध नियंत्रण का अर्थ एवं परिभाषा, स्कन्ध नियंत्रण प्रणाली की सारभूत आवश्यकताएँ, स्कन्ध प्रबन्ध के उद्देश्य, स्कन्ध नियंत्रण के लाभ, स्कन्ध को प्रभावित करने वाले तत्व, स्कन्ध निर्धारण के विभिन्न स्तर, स्कन्ध नियंत्रण की 'ए.बी.सी.' प्रणाली, पुनः आदेश मात्रा अथवा आर्थिक आदेश मात्रा, सामग्री अथवा स्कन्ध आवर्त, स्कन्ध नियंत्रण की न्यूनतम व अधिकतम प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की आदेश चक्र प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की बजटरी नियंत्रण प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की दविबिन प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की भौतिक गणन पद्धतियाँ (1) निरन्तर गणना प्रणाली (2) सामयिक गणना प्रणाली